राग दरबारी

टिकट का महासंग्राम

भले ही एक सीट पर चुनाव हो, पर चुनाव आते ही लोकतंत्र का खेला शुरू हो जाता है। वहाँ की जनता सोचती है कि शायद इस बार पानी आएगा, सड़क बनेगी, अस्पताल सुधरेंगे और महंगाई कुछ कम होगी। लेकिन राजनीति का खेला कुछ और ही कहता है। वहां सबसे बड़ा मुद्दा होता है किसे टिकट मिला और किसे नहीं?

एक टिकट क्या कटी, ऐसा हंगामा मचा मानो पूरे प्रदेश की तकदीर उसी टिकट के साथ चली गई हो। धरने, प्रदर्शन, प्रेस कॉन्फ्रेंस, समर्थकों का आक्रोश सब कुछ एक टिकट के इर्द-गिर्द घूमने लगा है। ऐसा लगता है कि जनता की सारी समस्याएं खत्म हो चुकी हैं, बस टिकट का न्याय होना बाकी है।

हैरानी की बात यह है कि जिन नेताओं को टिकट न मिलने पर लोकतांत्रिक व्यवस्था खतरे में दिखाई देती है, उन्हें शायद ही कभी उतनी बेचैनी दिखती हों जब किसी गांव में महीनों पानी नहीं आता, सड़क गड्ढों में बदल जाती है, अस्पतालों में इलाज नहीं मिलता या महंगाई आम आदमी की कमर तोड़ देती है।

आम आदमी तो बड़ा सहनशील प्राणी है। वह टूटी सड़क पर चल लेता है, महंगा सिलेंडर खरीद लेता है, बिजली के बढ़े हुए बिल भर देता है और फिर भी चुनाव में लाइन में लगकर वोट डाल आता है। लेकिन नेता जी को टिकट न मिले, तो यहां पूरा प्रदेश हंगामे की भेंट चढ़ जाता है।

विडंबना यह भी है कि यह पहली बार नहीं होता। कई नेता वर्षों से टिकट पाते रहे हैं, सत्ता का सुख भोगते रहे हैं। लेकिन जैसे ही पार्टी किसी और को अवसर देने का फैसला करती है, त्याग, समर्पण और विचारधारा अचानक आहत हो जाती है। तब सिद्धांतों से ज्यादा टिकट की कीमत समझ में आने लगती है।

कई पार्टी समर्पित नेता अपना पूरा जीवन पार्टी को आगे बढ़ाने और पार्टी प्रत्याशियों को जीतने में लगा देते ही लेकिन टिकट नहीं मिलने पर हंगामा नहीं करते, महत्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद भी ऐसी राजनीति क्यों होती है समझ से परे है।

असल सवाल यह है कि राजनीति का केंद्र टिकट होना चाहिए या जनता? यदि जनता की बुनियादी जरूरतें पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार उतनी ही गंभीरता से उठाई जातीं, जितनी गंभीरता से टिकट का विवाद उठाया जाता है, तो शायद लोकतंत्र की तस्वीर कुछ और होती।

फिलहाल तो लोकतंत्र का सबसे चर्चित विकास कार्य यही दिखाई देता है कि जनता समस्याओं का बोझ उठाती रहे और नेता टिकट का।

वीरेंद्र हीरालाल पथरिया
श्री लक्ष्मी नगर इंदौर

कटाक्ष

ग़ज़ल

तुम और धोखा दोगे नहीं मुझे यक़ीन है।
धोखेबाज़ों की रही नहीं कभी ये ज़मीन है।।

आज नहीं तो कल वादे पूरे कर ही देना,
पता है अब तू पहले से कम कमीन है।

आलम है बेशर्मी का चुनावों में हर सिम्त,
इसमें शामिल है वो भी जो तख़्त-नशीन है।

अंदाज़ तुम्हारा ऐसा कि तुम्हीं रहनुमा हो,
और तेरा आका ही मुल्क में नेक-तरीन है।

जो बोलता कम है सोचता कुछ ज़ियादा है,
बेवकूफ़ नहीं अब वह, काफ़ी ज़हीन है।

जीत के दावे ऐसे किए जाते आज वीरेन
कि जैसे हर दल बना वोटिंग मशीन है।

वीरेन्द्र नारायण झा वीरेन
समया-मधुबनी-बिहार-मिथिला।

कार्टून कोना

दतिया उपचुनाव : अवधेश नायक की बढ़ी राजनीतिक अहमियत

टिकट नहीं मिलने से नाराज नेता को मनाने में जुटी कांग्रेस, भाजपा भी साधने की कोशिश में

इंदौर। दतिया विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अवधेश नायक अचानक चुनावी राजनीति के केंद्र में आ गए हैं। कांग्रेस और भाजपा, दोनों ही दल उन्हें अपने पक्ष में बनाए रखने अथवा साधने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। कांग्रेस टिकट नहीं मिलने से नाराज नायक को मनाने में जुटी है, जबकि भाजपा उनके पुराने वैचारिक और संगठनात्मक संबंधों को आधार बनाकर उन्हें अपने पाले में लाने की संभावनाएं तलाश रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि नायक का रुख उपचुनाव के समीकरणों पर निर्णायक असर डाल सकता है।

कांग्रेस ने इस बार भी अवधेश नायक को उम्मीदवार नहीं बनाया और घनश्याम सिंह को प्रत्याशी घोषित कर दिया। इसके बाद नायक समर्थकों में खुलकर नाराजगी सामने आई। हालात को संभालने के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी स्वयं उनके निवास पहुंचे और उनके साथ भोजन कर संगठन की एकजुटता का संदेश देने का प्रयास किया। इसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भी सार्वजनिक मंच से स्वीकार किया कि वर्ष 2023 में अवधेश नायक को टिकट नहीं मिलने में उनकी भी भूमिका रही थी। उन्होंने मंच से ही नायक से माफी मांगते हुए पुराने मतभेद दूर करने की कोशिश की।

भाजपा भी साधने में जुटी

इधर भाजपा ने भी इस राजनीतिक अवसर को भुनाने की कवायद तेज कर दी है। भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी अवधेश नायक के घर पहुंचे और उनसे मुलाकात की। मुलाकात की तस्वीरें सामने आने के बाद नायक के भाजपा में शामिल होने की चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया।

सूत्रों के अनुसार भाजपा संगठन स्तर पर भी इस पूरे घटनाक्रम पर लगातार नजर बनाए हुए है और वरिष्ठ नेताओं के बीच रणनीतिक चर्चा हुई है। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि अवधेश नायक का राजनीतिक सफर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और भाजपा से शुरू हुआ था। बाद में उन्होंने कांग्रेस का दामन थामा। यही वजह है कि दोनों दल उन्हें अपने लिए महत्वपूर्ण मान रहे हैं।

वहीं जारी एक वीडियो संदेश में अवधेश नायक ने भाजपा में शामिल होने की अटकलों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि फिलहाल भारतीय जनता पार्टी में जाने का उनका कोई विचार नहीं है और इस संबंध में चल रही खबरें पूरी तरह भ्रामक हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस प्रत्याशी घनश्याम सिंह उनके बड़े भाई जैसे हैं और पार्टी के खिलाफ जाने का कोई सवाल नहीं है। नायक ने समर्थकों से भी अफवाहों पर ध्यान नहीं देने की अपील की।

भाजपा ने कार्यकर्ताओं को दिया जीत का मंत्र

उधर भाजपा ने दतिया उपचुनाव को प्रतिष्ठा का चुनाव मानते हुए संगठनात्मक तैयारियां तेज कर दी हैं। भाजपा के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह और क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल ने दतिया में पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की बैठक लेकर चुनावी तैयारियों की समीक्षा की। डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि दतिया उपचुनाव केवल एक विधानसभा सीट का चुनाव नहीं, बल्कि संगठन की प्रतिष्ठा का चुनाव है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से हर बूथ पर पूरी ताकत और समर्पण के साथ जुटने का आह्वान करते हुए भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी को ऐतिहासिक जीत दिलाने का लक्ष्य दिया। अजय जामवाल ने कार्यकर्ताओं से कहा कि प्रत्येक बूथ को अपनी जिम्मेदारी मानते हुए योजनाबद्ध तरीके से काम करें और हर बूथ पर अधिक से अधिक मतों की बढ़त सुनिश्चित करें।

नायक की भूमिका पर टिकी राजनीतिक नजर

दतिया उपचुनाव में अब सबसे बड़ी नजर अवधेश नायक के अगले राजनीतिक कदम पर है। हालांकि उन्होंने भाजपा में जाने की अटकलों को खारिज कर दिया है, लेकिन टिकट नहीं मिलने से उपजा असंतोष पूरी तरह समाप्त हुआ है या नहीं, इस पर राजनीतिक दलों की नजर बनी हुई है। माना जा रहा है कि नायक यदि पूरी सक्रियता से कांग्रेस के पक्ष में प्रचार करते हैं तो चुनावी मुकाबले की दिशा बदल सकती है, जबकि उनकी निष्क्रियता या अलग रणनीति दोनों दलों के लिए नए समीकरण पैदा कर सकती है।

उपचुनाव में कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाते हुए डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा

किसी की हिम्मत नहीं मेरे कार्यकर्ताओं का नुकसान कर दे

इंदौर। दतिया उपचुनाव के बीच भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कार्यकर्ताओं को भावनात्मक संदेश देते हुए भरोसा दिलाया कि किसी भी कार्यकर्ता के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि किसी की हिम्मत नहीं कि मेरे कार्यकर्ताओं का नुकसान कर दे। अगर ऐसी नौबत आई तो मैं भी तुम्हारे साथ जेल जाऊंगा।

गुरुवार को भाजपा कार्यालय में आयोजित कार्यकर्ता बैठक में मिश्रा ने हाल के घटनाक्रम का जिक्र करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं की आंखों में आंसू देखकर वे भी भावुक हो गए थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि नाराजगी का निशाना भाजपा नहीं, बल्कि कांग्रेस होनी चाहिए और हर हाल में भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी को विजयी बनाना है।

पीतांबरा माई की शपथ दिलाई

डॉ. मिश्रा ने कार्यकर्ताओं को पीतांबरा माई की शपथ दिलाते हुए भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान कराने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि वे हमेशा अपने चुनाव से ज्यादा दूसरे चुनावों में ताकत लगाते रहे हैं और कार्यकर्ताओं के सम्मान की रक्षा उनकी प्राथमिकता है। अपने संबोधन में मिश्रा ने कहा कि जो कुछ हुआ वह भ्रम और गुस्से की स्थिति में हुआ।

उन्होंने तीन दिन तक बाजार बंद रखकर समर्थन देने वाले व्यापारियों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि रास्ते में कई घायल कार्यकर्ता मिले, जिनमें एक कार्यकर्ता के सिर पर आंसू गैस का गोला लगने से गंभीर चोट आई।

आशुतोष टिकट काटने की क्षमता नहीं रखते

कार्यकर्ताओं के बीच फैली नाराजगी पर मिश्रा ने कहा कि कुछ लोग कह रहे हैं कि आशुतोष तिवारी ने उनका टिकट कटवाया, जबकि ऐसा नहीं है। उन्होंने कहा कि आशुतोष की टिकट काटने की क्षमता नहीं है।

टिकट का फैसला कहीं और होता है। जहां बात करनी होगी, हम करेंगे। गुस्सा गलत जगह मत निकालो। पार्टी हमारी मां है, इसे कभी मत भूलो।

पुलिस कार्रवाई पर भी जताई नाराजगी

पूर्व गृहमंत्री ने पुलिस प्रशासन पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यालय पर आंसू गैस के गोले दागे गए, जबकि कार्यालय सडक़ पर नहीं था। उन्होंने दावा किया कि पार्टी के पास तोडफ़ोड़ के फुटेज मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि एसपी साहब, मैं भूलने वाला प्राणी नहीं हूं। दोस्ती और दुश्मनी दोनों याद रखता हूं। निर्दोष कार्यकर्ताओं पर केस दर्ज करना और उन्हें पीटना किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

आशुतोष तिवारी बोले- सम्मान पर आंच नहीं आने देंगे

बैठक में भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी ने भी कार्यकर्ताओं को भरोसा दिलाया कि प्रशासनिक कार्रवाई से यदि किसी कार्यकर्ता को परेशानी हुई है तो वे हर परिस्थिति में उनके साथ खड़े रहेंगे।

उन्होंने कहा कि पीतांबरा माई को साक्षी मानकर कहता हूं कि जब तक मेरे तन में प्राण हैं, आप सभी के सम्मान पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने दूंगा।

दतिया उपचुनाव के बीच आयोजित इस बैठक को भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह बनाए रखने और संगठनात्मक एकजुटता का संदेश देने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है। साथ ही, नरोत्तम मिश्रा के बयान से यह भी स्पष्ट हुआ कि वे अपने समर्थकों के बीच सक्रिय भूमिका निभाते हुए चुनावी अभियान में पूरी ताकत झोंक रहे हैं।

दतिया चुनाव के बाद होगा मंत्रिमंडल का विस्तार

इन्दौर (नगर संवाददाता)। मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल के विस्तार पर एक बार फिर विराम लग गया है। इसकी वजह है कि दतिया में विधानसभा चुनाव है और पार्टी में भी तालमेल नहीं बन पा रहा है। अब चुनाव के बाद ही हकीकत सामने आएगी।

उल्लेखनीय है कि दतिया में इस महीने की 30 जुलाई को उपचुनाव है और उसके लिए दोनों ही पार्टी ने अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। भाजपा ने आशुतोष तिवारी और कांग्रेस ने कुं. घनश्यामसिंह को मैदान में उतारा है।

घनश्यामसिंह तीन बार के विधायक है, जबकि तिवारी संभागीय संगठन प्रभारी के अलावा हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके है। मुख्यमंत्री मोहन यादव की पसंद से ही उन्हें मैदान में उतारा गया है।

यहां से चुनाव हारे पूर्व विधायक नरोत्तम मिश्रा को मौका नहीं मिला है, जबकि उन्होंने चुनाव की तैयारी शुरू कर दी थी। दतिया विधानसभा चुनाव के चक्कर में मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल का विस्तार अटक गया है।

पिछले तीन महीने से यह बातें आम हो रही थी कि मंत्रीमंडल का विस्स्तार होने वाला है और इसके लिए दिल्ली तक नाम भेज दिए गए थे। परन्तु ये तय नहीं हो पाया कि कौन-कौन मंत्री बनेगा इसके लिए दिल्ली से ही फैसला होना था।

अभी भी इस पर विचार विमर्श चल रहा है लेकिन पूरी पार्टी दतिया में लग गई है। यह सीट भाजपा से कांग्रेस ने छीन ली थी, लेकिन यहां का चुनाव शून्य घोषित होने के बाद उपचुनाव हो रहे है। इस चुनाव के बाद ही मंत्रिमंडल में विस्तार किया जाएगा।

इन्दौर से भी मंत्रिमंडल में नए विधायकों को शामिल करने की बातें हो रही है। वैसे तो मधु वर्मा को छोड़ दे तो सारे ही विधायक सीनियर है और अधिक बार चुनाव जीते है। कैलाश विजयवर्गीय के अलावा महेन्द हार्डिया भी पांच बार के विधायक हो चुके है। उन्हें एक बार मंत्री भी बनाया जा चुका है। बाबा के अलावा मालिनी गौड़ और रमेश मेंदोला और उषा ठाकुर भी दावेदार है।

ये भी चार बार के विधायक रह चुकेहै। महिला कोटे से अगर मंत्री बनाने की बात सामने आई तो मालिनी गौड़ का दावा मजबूत हो सकता है।

हालांकि उनके नाम पर विरोधी सहमत नहीं हो पायेंगे इसके लिए उन्हें भोपाल, दिल्ली में कड़ी मेहनत करना पड़ेगी। कुल मिलाकर जो स्थितियां बन रही है उसमें यही कहा जा रहा है कि आने वाले दिनों में ही विधानसभा में विस्स्तार की बातें होगी। फिलहाल प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल सहित संगठन के सारे नेता चुनावी तैयारी में लग गए है।

मध्यप्रदेश कांग्रेस विधायक दल की बैठक कल

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में विधानसभा सत्र की रणनीति पर होगा मंथन

इंदौर। आगामी विधानसभा के मानसून सत्र की रणनीति तय करने और जनहित के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के लिए 19 जुलाई को शाम 7-30 बजे नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के निवास बी-12 (ए), 74 बंगला, भोपाल में कांग्रेस विधायक दल की बैठक आयोजित की गई है। बैठक में आगामी विधानसभा सत्र के दौरान सदन में उठाए जाने वाले प्रमुख जनहित के विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी तथा सरकार को जनता से जुड़े मुद्दों पर घेरने की रणनीति तैयार की जाएगी।

बैठक में जिन प्रमुख विषयों पर चर्चा होगी, उनमें मुख्यमंत्री एवं उनके परिवार से जुड़े भूमि घोटाले का मामला, किसान संकट, सरकारी नौकरियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए वार्षिक जॉब कैलेंडर जारी करने की मांग, युवाओं के रोजगार एवं भर्ती परीक्षाओं में व्यापक सिस्टम सुधार, यूसीसी, आदिवासियों एवं दलितों के अधिकारों से जुड़े विषय, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार एवं प्रदेश में सामने आ रहे घोटाले, भ्रष्टाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं। उमंग सिंघार ने कहा, कांग्रेस विधायक दल जनता की आवाज को पूरी मजबूती के साथ विधानसभा में उठाएगा। प्रदेश में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महिलाओं की सुरक्षा, केन-बेतवा सहित आदिवासियों और दलितों के अधिकारों पर लगातार गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। सरकार जवाबदेही से बच नहीं सकती। उन्होंने कहा कि विधानसभा का आगामी सत्र जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने और सरकार से जवाब मांगने का सत्र होगा। कांग्रेस विधायक दल पूरी तैयारी और एकजुटता के साथ जनता की अपेक्षाओं को सदन में रखेगा तथा प्रदेश के हर वर्ग से जुड़े मुद्दों पर सरकार को जवाब देने के लिए मजबूर करेगा।